भगवान श्री चित्रगुप्त जी के मंदिर

भगवान श्री चित्रगुप्त जी के मंदिर भारतवर्ष में निम्नलिखित स्थानों पर निर्मित हैं –

1. वाराणसी में दारानगर मुहल्ले में बलदेवबख्श के बनवाये हुए पुराने महल में श्री चित्रगुप्त जी का एक मंदिर है। बलदेव बख्श बनारस के राजा के दीवान थे।
2. अयोध्या के डेरा बीबी मुहल्ले में सम्राट विक्रमादित्य द्वारा निर्मित "धर्महरि चित्रगुप्त मंदिर" है । इसके दक्षिण भाग में भगवान हरि, मध्य में यमराज व वाम भाग में श्री चित्रगुप्त जी विराजमान हैं । कहते है कि श्रीराम सीता विवाह उपरान्त नवदम्पत्ति ने सबसे पहले इसी मंदिर में आकर चित्रगुप्त जी की पूजा की थी।
3. गोरखपुर की चित्रगुप्त सभा ने श्री चित्रगुप्त जी का नवीनतम मंदिर बनवाया है । 1965 ई. में श्री बृजमोहन सहाय ने अपने पिता श्री विष्णुमोहन सहाय के संकल्प पर इसका निर्माण कराया। यह राजकीय जुबली इंटर कालेज के सामने है।
4. झांसी में श्री चित्रगुप्त जी का एक पुरातन मंदिर झांसी के वर्तमान रेलवे जंक्शन की जगह परथा। झांसी राज्य के पतन के उपरान्त तत्कालीन सरकार ने झांसी रेलवे के निर्माण हेतु उस स्थान पर अधिकार कर मंदिर के लिये मुआवजे के रूप में वर्तमान पानीवाली धर्मशाला, गणेश बाजार के निकट कुछ भूमि दी । बाद में उस मंदिर के प्रांगण में एक हॉल पूजा–अर्चना तथा सांस्कृतिक व सामाजिक कार्यों के लिए बनवाया गया।
5. श्री चित्रगुप्त जी का प्राचीनतम मंदिर खजुराहो में कन्दरिया महादेव के मंदिरों की श्रृंखला में है। यह भारतीय शिल्पकला का अनूठा उदाहरण है । यह मंदिर 75 फीट 9 इंच ऊँचा तथा 51 फीट 9 इंच चौड़ा है । प्रतिमा भगवान सूर्यदेव की है पर कहलाता चित्रगुप्त मंदिर है ।
6. मांडवगढ़ (1305 ई.) चित्रगुप्त जी के एक मंदिर का उल्लेख इतिहासकार श्री वाकणकर ने किया है ।
7. अवन्तिका–उज्जैन श्री चित्रगुप्त जी की तपोभूमि के रूप में चिरकाल से प्रसिद्ध हैं । कर्क रेखा पर स्थित श्री महाकालेश्वर मंदिर के निकट अंकापाल उज्जयिनी में कायथा नामक ग्राम में श्री चित्रगुप्त जी का एक महत्वपूर्ण मंदिर है। जिसका जीर्णोद्धार 1994 में हुआ । यहाँ के लिए यह प्रचलित है कि इसके चबूतरे पर श्री चित्रगुप्त जी ने यज्ञ किया था । यहाँ काले पत्थर की चित्रगुप्त जी की मूर्ति के साथ उनकी दोनों पत्नियाँ व बारह पुत्रों की भी मूर्ति है । यहाँ कार्तिक शुक्ल द्वितीया को जनमेला लगता है ।
8. मगध की धरती पर जहानाबाद नगर के दरधा–यमुना संगम पर पश्चिम स्थित बड़ी ठाकुरवाड़ी के दक्षिण छोर पर श्री आदि चित्रगुप्त मंदिर की स्थापना 1902 में श्री शिवनारायण वर्मा की अध्यक्षता में हुई थी। यहाँ काले संगमरमर की मूर्ति थी जो 1976 की बाढ़ के उपरान्त श्री मायाशंकर प्रसाद समिति ने 1986 में पुनः स्थापित की। इसके प्रांगण में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद कक्ष के नाम से चित्रांश पुस्तकालय भी है ।
9. पटना के पूर्वी छोर पर दीवान मुहल्ला में नौजरघाट में गंगातट पर 400 वर्ष पुराना चित्रगुप्त जी का मंदिर है जिसे महाराजा सिताबराय के नाती श्री भूपनारायण सिंह ने बनवाया था। इसका जीर्णोद्धार श्रीराय मातादीन ने करवाया व श्री मथुराप्रसाद जी ने इसमें कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी सं. 2019 को भगवान चित्रगुप्त जी की श्वेत स्फटिक की भव्य मूर्ति स्थापित की। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद व श्री कृष्णबल्लभ सहाय बिहार के मुख्यमंत्री इससे जुड़े थे।
10. रायपुर शहर में भी 2 सार्वजनिक चित्रगुप्त मंदिर हैं । एक तेली बांध में पुराना मंदिर तथा दूसरा टाटीबांध में है। नवीनतम मंदिर टाटीबांध मंदिर श्री अरूण कुमार श्रीवास्तव के अथक परिश्रम के परिणाम स्वरूप उनके सहयोगियों द्वारा

CamScanner

बनवाया गया । जिसमें चित्रगुप्त जी की मूर्ति उनकी दोनों पत्नियों व 12 पुत्रों सहित है ।

11. देव श्री चित्रगुप्त मन्दिर, कान्चीपुर दक्षिण भारत के तमिलनाडु प्रान्त के चिंगलपुर जिले में कान्चीपुरम, शैव व वैष्णव मन्दिरों, मस्जिदों, चर्चों एवं अन्य सम्प्रदायों के देव स्थानों के लिए विश्व प्रसिद्ध नगर हैं । इसके दक्षिण में भाड़ा स्ट्रीट (नेल्लुका स्ट्रीट) में रामकृष्ण मठ पूर्वी दिशा में प्रसिद्ध देव श्री चित्रगुप्त मन्दिर हैं। इसका निर्माण ग्रेनाइट पत्थर से चोलवंशी राजा चैन्य चोल के मंत्री तुला वार मण्डवम् कनकराय करणीकर के समय में हुआ । मन्दिर का जीर्णोद्धार सन् 1911 में चित्रांश सुन्दरमूर्ति पिल्लई व अन्य करनाम ट्रस्टी के सहायोग से हुआ । मन्दिर के सामने पूर्वी ओर विघ्नेश्वर (गणपति) व पश्चिम की ओर वडलूर रामलिंगम स्वामी की संगमस्मर की मूर्ति है । मन्दिर के प्रांगण में नव ग्रह सन्धि केतु स्थित हैं जिनके आदि देवता श्री चित्रगुप्त स्वामी हैं। शास्त्रों की मान्यतानुसार श्री चित्रगुप्त भगवान की पूजा, अर्चना से केतु दोष प्रभावहीन हो जाता है, भक्तों के दुःख दरिद्रता व कष्ट का नाश हो परिवार में सुख शान्ति व समृद्धि प्राप्त होती है। कांचीपुरम के शंकराचार्य के मतानुसार मोक्ष प्राप्ति हेतु भक्तों को श्री चित्रगुप्त भगवान की आराधना नियमित करनी चाहिए । सभी मतावलम्बियों द्वारा इनकी पूजा की जाती है ।

12. श्री चित्रगुप्त मंदिर नरसिंहगढ़ (राजगढ़) म.प्र. श्री चित्रगुप्त मंदिर का निर्माण सन् 1972 में हुआ । मन्दिर में भगवान चित्रगुप्त की चतुर्मुखी साढ़े तीन फीट ऊँची खड़ी हुई प्रतिमा स्थापित है । मन्दिर निर्माण में चित्रांश महापरिवार समस्त बन्धुओं का सहयोग प्राप्त हुआ था।

13. श्री चित्रगुप्त मन्दिर, बड़ौनी, दतिया, म.प्र. भगवान श्री चित्रगुप्तजी का सन् 1975 में निर्मित मन्दिर ग्राम बड़ौनी, दतिया में स्थित है । मन्दिर में भगवान श्री चित्रगुप्त की खड़ी हुई संगमरमर की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। मन्दिर निर्माण में चित्रांस स्व0 रामगोपाल वर्मा का प्रमुख योगदान रहा।

14. श्री चित्रगुप्त मन्दिर, होलीपुरा, दतिया सन् 1964 में निर्मित मन्दिर में छातरपुर से लाई हुई पीतल की प्रतिमा की स्थापना का कार्य श्री अच्छेलाल श्रीवास्तव एवं उनकी धर्मपत्नी चित्रांशी श्रीमती हरगुंअर श्रीवास्तव के उल्लेखनीय योगदान से संभव हुआ।

15. श्री चित्रगुप्त मन्दिर, सिवनी म.प्र.मन्दिर में चित्रगुप्त जी की डेढ़ फुट की संगमरमर की प्रतिमा विद्यमान है। जिसके दाहिनी ओर सरस्वती जी व बाला जी तथा बाईं ओर सूर्यदेव एवं गणेश जी की प्रतिमायें स्थापित हैं। मन्दिर व्यवस्था आदि पर बहुचर्चित लेख से स्पष्ट है कि इस मन्दिर में श्री चित्रगुप्त भगवान की स्थापना सन् 1954 में हुई । कालान्तर में संवत् 2000 में भगवान का संगमरमर निर्मित धवल सिंहासन तथा फर्श के निर्माण में क्रमशः चित्रांश दीनदयाल सक्सेना एवं चित्रांश रूपसिंह सक्सेना का उल्लेखनीय योगदान रहा।

16. श्री चित्रगुप्त मन्दिर, आष्टा, सिहोर–म.प्र. मन्दिर में संगमरमर निर्मित भगवान श्री चित्रगुप्त जी की मूर्ति 24 मई 1985 को स्थापितहुई।

17. श्री चित्रगुप्त मन्दिर, लहार, भिन्ड–म.प्र.लहार स्थित भगवान श्री चित्रगुप्त मन्दिर को चित्रांश बिहारीलाल सक्सेना ने बनवाने के पश्चात स्थानीय कायस्थ समाज को हस्तान्तरित कर दिया।

18. श्री चित्रगुप्त मन्दिर, लालमाटी, चुंगी चौकी, जबलपुर महर्षि महेश योगी चेतना विज्ञान संस्थान के सहयोग से 12 जून 1981 को भगवान श्री चित्रगुप्त की संगमरमर की प्रतिमा, जी.सी.एफ. एम्पलाइज कायस्थ सभा द्वारा निर्मित देवालय में प्रतिष्ठित है ।

19. श्री साईं चित्रगुप्त धाम, बीना–म.प्र.15 जुलाई 1991 को कायस्थ समाज, बीना के सहयोग से प्राण प्रतिष्ठा हुई।

20. श्री चित्रगुप्त मन्दिर, ग्वालियर–म.प्र.हकीम

Scanned with CamScanner

देवी प्रसाद राम प्यारी न्यास मंडल कीर्ति स्थल में चित्रांश कृष्णबिहारी लाल श्रीवास्तव के प्रयासों से जयपुर में बनी प्रतिमा की प्रतिष्ठा अक्टूबर 1987 में हुई।

21. श्री चित्रगुप्त मन्दिर, रोहतक श्री चित्रगुप्त जी महाराज ट्रस्ट के अन्तर्गत संचालित मन्दिर में पूजा अर्चना एवं समारोह आदि सम्पन्न होते रहते हैं।

22. श्री चित्रगुप्त मन्दिर समथर, झांसी, उ.प्र. सन् 1895 में परिस्थितिवश मूर्तियों की प्राण–प्रतिष्ठा एक दुकान में की गई परन्तु 1942 में मूर्तियाँ वर्तमान मन्दिर में लाई गईं।

23. श्री चित्रगुप्त मन्दिर गोकुलपुरा, आगरा मन्दिर की स्थापना सन् 1877 में चार महानुभावों शिवप्रसाद सक्सेना, मुन्नूलाल अस्थाना, चिम्मनलाल अस्थाना एवं लक्ष्मण प्रसाद अस्थाना द्वारा मन्दिर के लिए भूमि दान द्वारा शुभारंभ हुआ । श्री चित्रगुप्त जी की मूर्ति की स्थापना डॉ. पन्नालाल, सी.एस.आई., आई.सी.एस. द्वारा कराई गई थी।

24. श्री चित्रगुप्त मन्दिर, बड़ा कुँआ किला, रायबरेली मन्दिर का निर्माण चित्रांश ठाकुरप्रसाद निगम द्वारा सन् 1857 के गदर से पूर्व कराया गया था। सन् 1904 से कार्तिक शुक्ल पक्ष दौज से पूजन समारोह मनाने की परम्परा का शुभारम्भ हुआ।

25. श्री चित्रगुप्त मन्दिर, ग्राम परैया, नमकसार रायबरेली मन्दिर जायस रेलवे स्टेशन से 10 कि.मी. पूरब दक्षिण की ओर परैया नमकसार में स्थित है । इसका निर्माण 1976 में चित्रांशी धनपति देवी धर्मपत्नी हरगोविन्ददयाल श्रीवास्तव ने कराया।

26. श्री चित्रगुप्त मन्दिर, ग्राम अकोढ़िया, सलोन, रायबरेली इस मन्दिर में कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वितीया एवं चैत्र पक्ष की दौज पर पूजन समारोह आयोजित होते हैं।

27. श्री धामगोदा बिहारी, वृन्दावन विख्यात मन्दिर श्री धामगोदा बिहार में जहाँ देवी, देवताओं, ऋषि, मुनियों एवं महापुरुषों की लगभग 300 प्रतिमायें शोभायमान हैं वहीं भगवान श्रीचित्रगुप्त जी की भव्य प्रतिमा 20 मार्च 1983 को चित्रांश जगदीश अस्थाना द्वारा प्रतिष्ठापित की गयी।

28. श्री चित्रगुप्त मन्दिर रायनपुर, चरखारी नरेश श्री जुआर सिंह देव के परामर्श एवं सहयोग से कायस्थ समुदाय द्वारा आर्थिक साधन जुटाकर सम्वत् 1960 विक्रमी को श्री चित्रगुप्त मन्दिर का निर्माण कराया गया।

29. श्री चित्रगुप्त मन्दिर कटरा, बाँदामन्दिर में मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा एवं स्थापना 28 मई 1972 को करायी गयी। बाँदा में एक अन्य पुराना मन्दिर भी है । जिसको चित्रगुप्त मन्दिर, महेश्वरी देवी के रूप से जाना जाता है ।

30. चित्रगुप्त मन्दिर कानपुर श्री चित्रगुप्त मन्दिर नवाबगंज, कानपुर सन् 1893 में निर्मित इस मन्दिर हेतु उल्लेखनीय योगदान चित्रांश मदन मोहन लाल श्रीवास्तव वकील का रहा । कानपुर का यह सबसे पुराना मन्दिरहै ।

31. श्री चित्रगुप्त मन्दिर पटकापुर, कानपुर इस मन्दिर में मूर्ति की प्रतिष्ठा सन् 1923 में चित्रांश रामप्रसाद जी सिन्हा के बहुमूल्य योगदान से संभव हुई।

32. श्री चित्रगुप्त मन्दिर गोविन्दनगर कानपुर श्री चित्रगुप्त समिति गोविन्द नगर द्वारा संचालित मन्दिर में चित्रगुप्त भगवान की मूर्ति की स्थापना सन् 1971 में चित्रांश डॉ. नन्दलाल सिन्हा के योगदान से संभव हुई।

33. श्री चित्रगुप्त मन्दिर, पहाड़गंज नई दिल्ली ।

34. श्री चित्रगुप्त मंदिर, सुहागनगर फिरोजाबाद श्री चित्रांगेश्वर महादेव मंदिर सैक्टर–1, सुहागनगर फिरोजाबाद में समस्त देवों के साथ ही भगवान श्रीचित्रगुप्त जी महाराज की खड़ीहुई प्रतिमा की स्थापना एवं प्राण प्रतिष्ठा सन 1996–97 में श्री चित्रगुप्त परिषद फिरोजाबाद के सौजन्य से श्री जे.पी.कुलश्रेष्ठ एडवोकेट अध्यक्ष, श्री विश्व विमोहन कुलश्रेष्ठ महासचिव एवं श्री लालजी बाबू श्रीवास्तव कोषाध्यक्ष तथा श्री रमन प्रकाश सक्सेना, श्री नरेन्द्र कुमार

Scanned with CamScanner

सक्सेना एवं मेजर डा. के.सी. श्रीवास्तव के सहयोग से स्थापित की गई । उक्त मंदिर में प्रतिदिन सुबह शाम समस्त समुदायों के द्वारा भगवान श्री चित्रगुप्त जी की आरती एवं स्तुति नित्य प्रति नियमित रूप से की जाती है। मंदिर की व्यवस्था श्री रमन प्रकाश सक्सेना जी के द्वारा की जाती है ।

35. श्री चित्रगुप्त मन्दिर ताजगंज आगरा हाल में इस मन्दिर का जीर्णोद्धार किया गया है तथा यहाँ भी चित्रगुप्त जी की मूर्ति की पुर्नस्थापना की गई है ।

36. श्री चित्रगुप्त मन्दिर भोगीपुरा शाहगंज आगरा इस मन्दिर का निर्माण श्रीमती गणेश कुँवरि ने अपने पति बाबू जगजीत सिंह जी कुलश्रेष्ठ जमींदार की इच्छानुसार कराया था। इस मन्दिर के साथ श्री चित्रगुप्त धर्मशाला भी स्थित है जो सजातीय बन्धुओं एवं समाज के अन्य कार्यों के लिए है ।

Scanned with CamScanner

आरक्षण और कायस्थ

– विश्व विमोहन कुलश्रेष्ठ

जैसा कि विदित ही है कि हिन्दुस्तान में कायस्थ समाज की जब बात चलती है तब बगैर किसी संकोच के यह बात भी सामने आती है कि यह जाति बुद्धिजीवी और नौकरीपेशा जाति है। जिसका मुख्य कार्य पढ़ना, पढ़ाना और समाज को ऐसे प्रबुद्धजीवी व्यक्ति देना रहा है जो राष्ट्र के विकास में अपनी महती भूमिका का निर्वहन करते रहे हैं ।

वो समय चाहे मुगल साम्राज्य रहा हो अथवा अंग्रेजी शासन और आजादी के बाद का स्वतंत्र भारत हर समय और परिस्थिति में कायस्थ समुदाय अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाये रखे रहा है और सदैव ही शासन और प्रशासन के साथ मिलकर राष्ट्र के विकास में अपनी समस्त प्रज्ञा और मेधा शक्ति का इस्तेमाल करता रहा है।

वर्तमान समय में जबकि भारत में कायस्थों की संख्या लगभग 10 करोड़ से ऊपर आँकी गई है, के सामने अपनी पहचान और अस्तित्व बनाये रखने का संकट उठ खड़ा हो गया है । वैसे तो हम जिस समस्या के संदर्भ में इस अस्तित्व के खतरे की बात कर रहे हैं वह न केवल कायस्थ समाज से ही संबंध रखता है अपितु यह भारत के समस्त सवर्ण जातियों से भी जुड़ा हुआ है। जो सब भी इसी समस्या से प्रभावित हो रहे हैं और यह समस्या है जाति व धर्म आधारित आरक्षण। आजादी के बाद संविधान निर्माताओं ने आरक्षण की बात कही थी । यह आरक्षण उन दलित शोषित समाज के वंचित लोगों को सहयोग और संरक्षण प्रदान करने के लिये 10 वर्षों के लिये लागू किया गया था और यह अपेक्षा व्यक्त की गई थी कि भारत की राष्ट्रीय और राज्य सरकारें इस तरह से प्रयास करेंगी कि इस निर्धारित 10 वर्ष की अवधि में समस्त दलित, शोषित समाज के वंचित परिवारों को ऊपर उठाया जा सके । लेकिन यह 10 वर्ष के लिये लागू किया गया आरक्षण तथाकथित तुष्टीकरण और वोट बैंक बनाये रखने का शस्त्र बनकर राजनैतिक पार्टियों का मुख्य आधार बन गया । आजादी के 60 वर्ष बाद भी अगर हम नजर

Scanned with CamScanner

उठायें और देखें कि इस आरक्षण से केवल कुछ ही लोगों को फायदा मिला और जिन लोगों को फायदा मिला आज उन्हीं आगे बढ़े हुये परिवारों के लोगों के लिये ही आरक्षण काम आ रहा है। वास्तव में अधिसंख्य शोषित और दलित आज भी वहीं की वहीं हैं।

क्या वास्तव में यह आरक्षण भविष्य में भी उन जरूरतमंदों के लिये फायदेवर साबित होगा हमारी दृष्टि में तो कम से कम नहीं । फिर ऐसे आरक्षण से लाभ ही क्या जो किसी समाज का भला ही न कर सके । दूसरी ओर अगर देखा जाय कि आरक्षण की परिधि से वंचित जो जातियां है जिनमें ठाकुर, ब्राह्मण, वैश्य व कायस्थों में भी गरीब और जरूरतमंद परिवार हैं जिनकी दो जून की रोटी की व्यवस्था होना भी मुश्किल रहता है। क्या इन्हें सरकारी सहयोग और संरक्षण/आरक्षण की आवश्यकता नहीं है ? क्या इन लोगों का इन अगड़ी जातियों में जन्म ले लेना इनके लिये अभिषाप हो गया है ? वास्तव में अच्छा तो यह रहता कि आरक्षण का आधार जातीय अथवा धार्मिक न होकर आर्थिक होता । जिसमें समस्त जाति व धर्म के जरूरतमंदों, गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों को आरक्षण का सहारा देकर विकास की मुख्य धारा में जोड़ा जाता । लेकिन इस ओर किसी राजनैतिक पार्टी या सरकार का कभी ज्यादा ध्यान नहीं गया। पिछली सरकार द्वारा वर्तमान आरक्षण के गुणदोष की समीक्षा कर सवर्णों के अशक्त जनों को भी आरक्षण की परिधि में लाने हेतु युक्तियुक्त उपाय सुझाने के लिए एक आयोग का गठन किया गया था । लेकिन वर्तमान सरकार के पदारूढ़ होते ही उक्त आयोग का काम ठंडे बस्ते में चला गया। इतना ही नहीं इसके उलट महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने नई सरकार के प्रथम सत्र का उद्घाटन करते हुये शासकीय नीतियों से संबंधित जो अपना भाषण पढ़ा उसमें वर्तमान शासन की इस मंशा को भी उजागर किया गया है कि अब गैर सरकारी प्रतिष्ठानों, निजी क्षेत्रों में भी आरक्षण की व्यवस्था लागू की जाय । इतना ही नहीं केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री सुश्री मीरा जगजीवनराम ने तो अपने विभाग के साथ जुड़े निजी क्षेत्रों, गैर सरकारी प्रतिष्ठानों, संगठनों में ऐसा करने के मौखिक निर्देश भी दे डाले हैं ।

सोचने का विषय है कि सरकारी क्षेत्र से अगड़ी जातियों के लिये अवसरों की कमी होती ही जा रही है । येन–केन–प्रकारेण अगड़ी जातियों के पढ़े–लिखे युवक युवतियां गैर सरकारी क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्राप्त कर रहे थे अब वहाँ के दरवाजे भी इन लोगों के लिये सीमित होने जा रहे हैं । आखिर यह सरकारें इस देश को कहाँ ले जाना चाहती है ? इस आरक्षण के चलते एक पढ़ा लिखा योग्य युवा रोजगार के लिये तरसता है । वहीं इसके विपरीत कम योग्यताधारी व्यक्ति जो सर्वथा उस पद और सेवा के लिये अनउपयुक्त है उसे आरक्षण के आधार पर रोजगार प्राप्त हो जाता है । वह वक्त बहुत दूर नहीं जबकि हमारे देश की नौकरियों में योग्यता और दक्षता ढूढ़े नहीं मिलेगी । परिणाम बहुत घातक होंगें। आरक्षण जहाँ जातिवाद को पनपा रहा है वहीं प्रतिभाओं को अवसर न मिलने से समग्र राष्ट्र का अहित ही होगा और शासकीय उपक्रमों में आरक्षण के चलते सक्षम व्यक्तियों को अवसर नहीं मिलने से उपक्रम अलाभकर सिद्ध हो रहे हैं। यदि प्राईवेट सैक्टर में भी आरक्षण की व्यवस्था लागू कर दी गई तो स्वर्ण जातियों के लिये नौकरियों में स्थान पाने की समस्या और भी विकराल हो जायेगी । जिसे किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।

कायस्थ समाज इस जातीय व धार्मिक आधारित आरक्षण का विरोध करता है और ब्राह्मण, ठाकुर व वैश्य समुदाय को साथ लेकर एक देशव्यापी उग्र आंदोलन छेड़ने के लिये संयुक्त रूप से कार्य योजना बनाने पर विचार कर रहा है ताकि सभी अगड़ी जातियों जो कि दोषपूर्ण आरक्षण नीति से कुप्रभावित हो रही है आरक्षण के विरोध में आगे आ सकें।

अंत में कायस्थ महासभा देश के प्रधानमंत्री से पुरजोर अपील करती है कि दोषपूर्ण आरक्षण नीति को जड़मूल से समाप्त कर आर्थिक आधार पर आरक्षण देकर समाज के सभी वर्गों को लाभ पहुँचाने वाली नीति को अपनाया जाय ।

Scanned with CamScanner